Vageshwari Sadhana(Vidya Prapti Hetu)
वागीश्वरी -साधना (विद्या हेतु)

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info
www.facebook.com/yogeshwaranandji

प्रिय साधकगण! अनेकों बार यह देखने में आया है कि परिवार में माता-पिता के उच्च शिक्षित होने पर भी उनके बच्चे पढ़ाई में रूचि नहीं रखते हैं । माता-पिता के लाख प्रयास करने के उपरान्त भी बच्चा न टयूशन ठीक से लेता है और न ही विद्यालय में अपनी क्लास में पढ़ाई पर ध्यान देता है। परिणाम स्वरूप या तो वह फेल हो जाता है और यदि पास भी हो जाता है तो उसे अच्छे अंक प्राप्त नहीं होते है।

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है । आज स्थिति यह है कि प्रान्तीय अथवा अखिल भारतीय स्तर पर होने वाली परीक्षाओ में एक से एक उच्च स्तरीय विद्यार्थी भाग लेते हैं। उन परीक्षाओं में भी पढ़ाई में ध्यान न देने वाले युवक असफलता का मुंह देखते हैं। एक के बाद एक परीक्षा देते हुए वह असफल रहते हैं और अंत में उनके भीतर इनफिरियोरिटी कोम्पलेक्स पैदा हो जाता है, और इस कारण से वे समाज से कटने लगते हैं। परिणामतः एक ऐसा व्यक्तित्व जो अपने देश के उत्थान का कारण बन सकता था, वह या तो अपराध की दलदल में धंस जाता है या फिर अपना जीवन-यापन करने में भी अशक्त हो जाता है।

यदि आप भी किसी ऐसी ही समस्या से घिरे हैं, आपका बच्चा पढ़ाई में रूचि नहीं ले रहा है तो सर्वप्रथम उसकी पढ़ाई से विमुखता का कारण जानिये। कई बार बच्चा किसी मानसिक, शारिरिक अथवा अन्य किसी कारण पढ़ नहीं पाता है। माता–पिता के मध्य यदि तनाव रहता हो,
बच्चे को किसी अन्य विद्यार्थी अथवा अध्यापक द्वारा परेशान किया जा रहा हो अथवा उस पर अवांछित दबाव बनाया जा रहा हो, माता–पिता उससे बहुत अधिक अपेक्षा रखते हों और बच्चा उन अपेक्षाओं पर खरा उतरने में अत्यधिक मानसिक दबाव महसूस करता हो, यदि किसी व्यक्ति द्वारा बच्चे का उत्पीड़न किया जा रहा हो और बच्चा किसी कारणवश अपने माता–पिता अथवा अभिभावक को बताने में स्वयं को असमर्थ समझता हो, या फिर अन्य कोई मनोवैज्ञानिक कारण हो, तो भी बच्चा पढ़ाई से विमुख हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले बच्चे की भावना को समझें, उसके मित्र बने और उसे जता दें कि आप उसके संरक्षक हैं। आपके होते उसकी सम्पूर्ण सुरक्षा होगी ।

लेकिन इन सभी प्रयत्नों के बाद भी आपका बच्चा पढ़ने में रूचि नहीं लेता है या फिर रूचि लेता भी है तो उसे पाठ याद न रहते हों तब ऐसी स्थिति में वागीश्वरी देवी की साधना करने का विधान है। यह साधना आप स्वयं भी कर सकते हैं और किसी विद्वान व्यक्ति से भी सम्पन्न करा सकते हैं। विश्वास कीजिए यह प्रयोग मात्र प्रयोग ही नहीं बल्कि महा प्रयोग है, जिसका उत्तम परिणाम मिलता ही मिलता है।

जो साधक किसी कारणवश किसी विद्वान से यह अनुष्ठान कराने में असमर्थ हैं, और यह अनुष्ठान स्वयं करना चाहते हैं, उनके लिए इसका विधान मैं यंहा लिख रहा हूॅ।

सबसे पहले मैं भगवती वागीश्वरी का ध्यान और उसके बाद मंत्र लिख रहा हूॅ। इस मंत्र की जप संख्या एक लाख है, इसके दशांश मंत्रों से हवन, हवन के दशांश मंत्रों से तर्पण और तर्पण के दशांश मंत्रों से मार्जन और सबसे अन्त में दस छोटी कन्याओं एवं एक छोटे लड़के को भोजन कराना चाहिए। इस

प्रकार यह अनुष्ठान पूर्ण होता है और भगवती वागीश्वरी की कृपा-स्वरूप बालक पढ़ाई की ओर चलने लगता है।

ध्यान

ध्यायेद् वागीश्वरीं देवीं हंसारूढ़ा हसन्मुखीम् ।
पूर्णेन्दु-वदनां कुन्द-कर्पूर-सित-विग्रहाम ।।
अर्धेन्दु-विलसद्-भालां दिव्य-आभरण-भूषिताम् ।
विशाल-लोचनां तुंग-स्तनीं स्मित-मनोहराम् ।।
पीयूष-कुम्भं विद्यां च वामे सम्बिभ्रतीं शिवाम् ।
वीणामक्ष-गुणान् दक्षे धारयन्तीं चतुर्भुजाम् ।।

अर्थः- हंस पर आरूढ़, मुस्कराती हुई, पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली, कुन्द और कपूर के समान श्वेत शरीर वाली, ललाट पर अर्ध चन्द्रमा , दिव्य आभूषणों से विभूषित, बड़े-बड़े नेत्रों वाली, ऊंचे स्तनों वाली, मुस्कराहट से मन को हरने वाली, अपने दोनों बायें हाथों में अमृत-कलश और भगवान शिव का शास्त्र तथा दोनों दांये हाथों में वीणा और माला धारण किये हुए चार भजाओं वाली वागीश्वरी का मैं ध्यान करता हूँ ।

इस प्रकार ध्यान करने के उपरान्त मूल मंत्र से न्यास करें। तत्पश्चात मूल मंत्र का अनुष्ठान करें । मूल मंत्र इस प्रकार हैः-

मंत्रः- ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ।

My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based free of cost monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

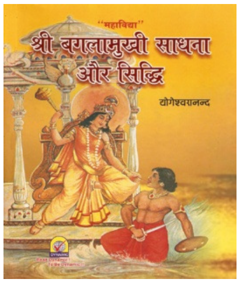

2. Mantra Sadhana

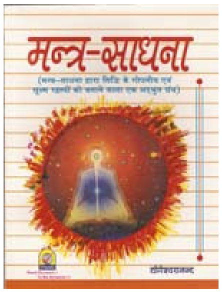
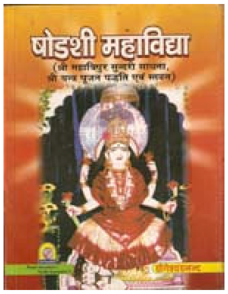
3. Shodashi Mahavidya (Tripursundari Sadhana)